नित्य नियम

ÈçaièÉéÉ ìeçeaë èS± açe ÝeÝ ÍeÉae± ae| æaeaeÝ

नित्य नियम

संपादन कार्य

साहित्य लेखन विभाग

प्रकाशक

सतसंग साहित्य डिपार्टमेन्ट

स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर – ३८२००९

नित्य नियम

प्रस्तुतकर्ता	श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा संस्था (SMVS)
प्रकाशक	सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर-३८२००९
प्रेरणामूर्ति	प.पू.अ.मु.सद्. श्री देवनंदनदासजी स्वामीश्री (गुरुवर्य प.पू. बापजी)
आवृत्ति	प्रथम , जुलाई, २०१३
प्रत	२५००
मूल्य	₹ ८/-
सौजन्य	सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट (SMVS)
सूचना	© सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट (SMVS)

प्रस्तावना

धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति यह चार स्वामिनारायण संप्रदाय के मूल आध्यात्मिक स्रोत्र हैं। स्वामिनारायणीय साधना में भक्ति को प्रमुख स्थान दिया गया है। इस लिए ही स्वामिनारायण संप्रदाय को भक्ति संप्रदाय से उद्‌बोधित करना वह कोई नई बात नहीं है। स्वयं श्रीजीमहाराज को संतो-भक्तों में अन्य अंग से भक्ति का अंग विशेष प्रिय था। ये ही कारण संत-भक्त स्वयं श्रीहरि को 'भक्तिप्रिय' ऐसे विशेषण से भी उच्चारते थे।

स्वामिनारायण संप्रदाय के आश्रित सभी भक्त समुदाय अपनी दिनचर्या भक्तिमय हो के करे ऐसे उद्देश्य से श्रीजीमहाराज ने 'सत्संगिजीवन' ग्रंथ में संत एवं हरिभक्त दोनों के लिए दिनचर्या में भक्ति करने के लिए नित्य नियम बताया है। यह नित्य नियम में धुन्य, कीर्तन, आरती, अष्टक, मंगल श्लोक, थाल, ध्यान,

स्वाभाविक चेष्टा, वचनामृत, बापाश्री की वार्ता आदि सद्‌ग्रंथो का वाचन यह सभी का समन्वय किया है । श्रीहरि की आज्ञा के अनुसार प्रत्येक भक्त दिनचर्या में भक्तिमय होकर नित्य नियम करके श्रीहरि की मूर्ति में संलग्न हो सके इस लिए यह 'नित्य नियम' पुस्तिका प्रकाशित की गई है ।

यह पुस्तिका में ब्राह्ममुहूर्त में उत्थान से लेकर रात्रि शयन करने तक दिवस दरमियान करने के सभी नियमों का समन्वय किया गया है। जो प्रत्येक मुमुक्षु को भक्ति के अंग में महाराज की मूर्ति में संलग्न होने को ज्यादा से ज्यादा सहयोगी होंगे । अपेक्षा है कि सभी मुमुक्षु यह पुस्तिका का उपयोग करके दैनिक जीवन में सभी कार्य भक्तिमय होके तथा मूर्ति में संलग्न होके करेंगे ।

– **साहित्य लेखन विभाग**

स्वामिनारायण संप्रदाय के आश्रितों को करने के नित्य नियम

१. स्वामिनारायण भगवान की व्यक्तिगत पूजा हमेशा करनी चाहिए।
२. ३० मिनट ध्यान करना चाहिए।
३. मंदिर नज़दीक में हो तो दर्शन करने जाना चाहिए।
४. पाँच मानसीपूजा नियमित करनी चाहिए।
५. सायं ४बजे समूह-प्रार्थना तथा ओरडा के पद बोलिए।
६. एक 'वचनामृत' का एकाग्रता से वांचन करना चाहिए।
७. एक 'बापाश्री' की वार्ता का एकाग्रता से वांचन करना चाहिए।
८. उम्र जितनी माला नियमित करनी चाहिए।
९. आरती, दर्शन एवं अष्टक-श्लोकों का गान करना चाहिए।
१०. रात्रि शयन पूर्व स्वाभाविक चेष्टा नियमित बोलनी चाहिए।

अनुक्रमणिका

१. ध्यान ७
२. प्रभातियां ९
३. आरती ११
४. थाल–श्लोक.................................. १५
५. साम ४ बजेकी प्रार्थना – पद १८
६. गोड़ी २६
७. संध्या आरती–धुन्य–अष्टक २७
८. पोढनियां ३९
९. स्वाभाविक चेष्टा ४०
१०. कीर्तन ७६
११. प्रार्थना ८०
१२. वचनामृतम् ८४
१३. बापाश्री की बातें ८५
१४. मंगल श्लोक (शार्दूलविक्रीडित छंद) . ८७
१५. स्वामिनारायण नामावली ८८
१६. सभागान ९४

१. ध्यान

पुरुषोत्तमरूप होकर ध्यान करना,
प्रेम से पाय पडी;
मस्तक भव्य विशाल भाल झलकत,
कर्ण भ्रकुटि भली;
चंचल है सुख देण नेण नासा,
ज्योति कपोल झलकत;
मुखडुं व मूछ रेख अधर देखी,
दाढी से दृष्टि ठरत ॥ १ ॥
कंठ में तुलसी दाम वाम स्कंध पे,
यज्ञोपवीत सार है;
छाती मनहर श्याम स्तन मध्य में,
विनगुण शोभित हार है,
बाहु दंड प्रचंड श्याम कोहनी,
कांडा हस्त में बल है;
अंगुलियाँ व हथेली दोऊ राति,
रेखाएँ सुंदर हैं ॥ २ ॥

देखो उदर अनूप रूप सोहे,
नाभि है गहरी घनी;
पहेरी धोती श्याम श्याम कटि पर,
उज्ज्वल सोहत अति;
साथल सार रसाल सुंदर अति,
वर्तुळ जानु भले;
जंघा सदृश मृदु नरम पिंडी,
घूंटी की दिव्य कला ।। ३ ।।
पानी पोंचा अंगुलियाँ दश देखो,
रक्त नख में सोहती;
सोलह चिह्न सहित चरण कमल की,
जोडी भली शोभित;
अंग अंग सळंग निरखुं मैं स्वामी,
बिरद तव उर धरी;
टाली सर्व रिपु व देहभाव,
सुख में थिजाइये हरि ।। ४ ।।

२. प्रभातियां

१. वेलेरी ऊठी के

वेलेरी ऊठी के वा'लाजी का वदन निहारुं;
देख कमलमुख दुःख दूर विसारुं...टेक
वदन वालाजी का अति सुखकारी;
नीरखी नीरखी जाउँ मैं तो सरवस वारी....१
मुख देखे बिना जल भी न पीउं;
प्राणजीवन को मैं तो देख देख जीउं...२
प्राणजीवन देखन मैंने जनम लिया है;
झूठा रे संसार सब त्याग किया है...३
प्रेमानंद के स्वामी के काज छोडा है,
संसारी सब भले, जलते ही रहें...४

२. प्रातः भयो मनमोहन

प्रातः भयो मनमोहन पियारे,
प्रीतम क्यों रहे पोढ के;
बारंबार करूं मैं बिनती,
जगजीवन कर जोड़ के...प्रातः
घरघर से हरिभक्त आए,
दर्शन कारण दोड़ के;
आंगन में खड़ी सब नारी,
मही बिलोना छोड़ के...प्रातः
बहुरूपी दरवाजे बैठे,
धर्मनेजा गाड़ के;
मुख देखन को आतुर मन में,
रोक रखे हैं जोर से...प्रातः
भैरव राग गुनीजन गावे,
तान मनोहर तोड़ के;
ब्रह्मानंद के नाथ विहारी,
उठे आलस मोड़ के...प्रातः

३. आरती

१. मंगला आरती

जय मंगलकारी, प्रभु(२) जय घनश्याम दयालु(२)
जय जय सुखकारी...प्रभु जय...टेक
मंगल रूप अनुपम नखशिख मंगल है(२)
सुखड़ा देने मंगल(२) मूर्ति मंगल है...प्रभु जय
मंगल मुखकमळ देख सुख में थीजत है(२)
नासा नैन भ्रकुटि(२) भाल में रीझत है...प्रभु जय
मंगल हृदयकमल पर, स्तन मंगल शोभते(२)
छाती उपरती कंठ पे(२) मुनिजन सब लोभते...प्रभु जय
मंगल हस्तकमल में रेखाएँ न्यारी(२)
कांडा कोहनी व बाहु(२) बल भरा भारी...प्रभु जय
मंगल नाभिकमल पर त्रिवली मंगल है(२)
श्याम कटि पर धोती(२) उदर मंगल है...प्रभु जय
मंगल चरण कमल में चिह्न भले सोलह(२)
घूंटी फणा रू जंघा(२) जानु है गोल...प्रभु जय
मंगलमय मूर्ति के जो दर्शन करेंगे,
दासन के दास कहे रसबस(२) हो सुख में ठरेंगे...प्रभु जय

अब मेरे व्हाला के दर्शन

अब मेरे व्हाला के दर्शन काज,
हरिजन आवे हजारो हजार...१
पलंग पे बिराजे सहजानंद स्वामी,
पूरण पुरुषोत्तम अंतरजामी...२
सभा मध्य बैठे मुनि के वृंद,
बीच शोभे तारे मढ़ा ज्यूं चंद्र...३
दुर्गपुर खेल मचा अति भारी,
संग रमे साधु एवं ब्रह्मचारी...४
ताली बजे उपरती अति सारी,
धुन्य मची चौदह लोक से न्यारी...५
पगलडी में छोगला अति सोहे,
देख देख हरिजन के मन मोहे...६
पधारे व्हालो सभी सुख के राशि,
सहजानंद स्वामी अक्षरधाम के वासी...७
मिट गई मेरी जन्मो जनम की खामी,
मिले मुझे निष्कुलानंद के स्वामी...८

बापा आप सदा दिव्य रूप में

बापा आप सदा दिव्य रूप में;
साथ ही हो सर्वदा,
बापा बालक आपके हम सभी,
उनको भूलो नहीं कदा...१
बापा आप यह समय में,
आकर बिराजे यहीं,
बापा बिरद आपका उर धरी,
रख लिये सदा मूर्ति महीं...२
बापा आप मानुष रूप में,
जैसे सुख देते थे,
बापा दिव्य नये नये सुख वैसे,
आज हम मांगते...३
बापा आनंद आज उर उलटिया,
त्यूं ही सभी डोलते,
बापा रु घनश्याम की ही जय हो,
मुख से बहु बोलते...४

अबजीबापा की आरती-२

जय अबजीबापा, जय जय अबजीबापा;
घर हमारे आये(२) हम को सुख दिये...टेक
मस्तक पगडी बांध, सिंहासन पर बैठे(२)
हरिजन एवं संतगण(२) सब बैठे नीचे...जय
हिरदै पहने हार, गजरा दो हाथ में(२)
हम को दीन्ही प्रसादी(२) हाथ रखे सर पे...जय
हरिजन जोड़ हाथ, खडे सभी आगे(२)
सदा रखो साथ में(२) वो ही सब माँगे...जय ३
कृपा कर के बापा, बोले बहु प्रीत से(२)
सदा रखे साथ में(२) धारो दृढ़ चित्त से...जय ४
आत्यंतिक कल्याण करने, अवनी पर आये(२)
अनादिमुक्त की स्थिति(२) सर्वोपरी लाये...जय ५
प्रौढ प्रताप बताया, प्रकटे सुखकारी(२)
हृष्टपुष्ट मूर्ति पर(२) सेवक बलिहारी...जय ६

४. थाल-श्लोकों

जिमो थाल जीवन जाउं वारी,
धोऊँ कर चरण करो त्यारी रे..जिमो टेक
बैठो प्रभु पीढ़े पर बिराजो,
कटोरे कंचन की थाली;
जल से भरे चंबु चोखाली रे...जिमो १
कडे गेहूँ की पुड़ी बनाई हैं,
घृत मिसरी में डुबो दी हैं;
निकाला रस आम को घोली रे...जिमो २
मीठे साटे घेबर फूलवड़ी,
दूधपाक मालपूए कढ़ी;
पूरी नरम हुई है घी में चढ़ी रे...जिमो ३
अचार शाक सुंदर भाजी,
लाई हूँ मैं तुरंत बनाकर ताजी;
दही भात सक्कर है काफी रे...जिमो ४

चुल्लु करो लाई मैं जलझारी,
ईलायची तज लविंग सुपारी;
पानबीडी बनाई अति सारी रे...जिमो ५
मुखवास मनपसंद प्रभु लीजे,
प्रसादी थाल की हमें दे दीजे;
भूमानंद कहे प्रसन्न प्रभु होजे रे...जिमो ६

राजभोग आरती दौरान बोले जाते श्लोकों

हे विश्वेश सकळ विश्व के हो विधाता,
दाता तुम्ही सकल मंगल शांतिदाता;
यूं ही तुमारा करुणानिधि सत्यनाम,
साष्टांग नाथ तुम्हें करुं मैं प्रणाम...१

अज्ञान पाश करुणा कर काट दीजो,
नित्य प्रभु तव पद मम वृत्ति रखो;
भक्तों का पालन करो प्रभु सर्वयाम,
साष्टांग नाथ तुम्हें करूँ मैं प्रणाम...२
जिसने रची चित्र विचित्र सृष्टि,
जिसकी करुणामय दिव्य दृष्टि;
जिसने किया है अद्‌भुत काम,
प्रेम से करूँ वो प्रभु को प्रणाम...३
है काल के काल दयालु देव,
जन सभी का हो प्रतिपाल तेव;
कल्याण दाता करूँ नित्य सेव,
श्री स्वामिनारायण इष्टदेव...४

५. सायम् प्रार्थना - पद

महाबलवंत माया तुम्हारी,
जिसने आवृत किये नरनारी;
ऐसा वरदान दीजिए आप,
हमें माया ना करे संताप...१
तुम्हारे स्वरूप में जीवन,
नावे मानुषबुद्धि किसी दन;
जो जो लीला करो तुम लाल,
उसे समझूँ अलौकिक ख़्याल...२
सत्संगी जो तुम्हारे आश्रित,
उसका अभाव न आवे चित्त;
देश काल क्रिया में हमेश,
कभी भूलें न आपको लेश...३
काम, क्रोध रु लोभ कुमति,
मोह व्याप्त से न फिरे मति;

आप भजन में विघ्न जो पड़े,
माँगे कभी हमें नव नड़े...४
यही माँगतें है हम आज,
दया करके दीजै महाराज;
और जो कभी ना हम माँगे,
प्रभु दया कर सुन लीजे...५
कभी न देना देहाभिमान,
जासे बिसर जाते भगवान;
कभी कुसंग का संग न देना,
अधर्म से ही उगार लेना...६
कभी न देना संसारी सुख,
न देना संग आप-विमुख;
न देना प्रभु जक्त बड़ाई,
मद-मत्सर, ईर्ष्या कांई...७
न देना देह सुख-संजोग,
न देना हरिभक्त-विजोग;

न देना हरिभक्त-अभाव,
न देना अहंकारी स्वभाव...८
न देना प्रभु ! नास्तिक-संग,
छोड़ तुम्हें, राचे कर्म-रंग;
न माँगे हम यह जोड़ हाथ,
न देना दया करके हे नाथ...९
सुनि बोले घनश्याम सुंदर,
जाओ दिया तुमको यह वर;
मेरी माया से मुक्त रहोगे,
देहादिक से निर्बंध होगे...१०
न देखोगे मुझ क्रिया में दोष,
मुझे समझोगे सदा अदोष;
ऐसे कही आनंदभर बात,
सब ने मानी सत्य सभी बात...११
ऐसे दास को दिये फगवे,
दूजा कौन समर्थ ऐसा देवे।

ओरडा के पद

पद - १

आज मेरे भुवन रे, आए अविनाशी अलबेल;
सखी मैंने बुलाया रे, सुंदर छोगावाले छैल...१
निरखे नैनभर रे, नटवर सुंदर श्री घनश्याम;
शोभा क्या कहूँ रे, निरख लाजै कोटिक काम...२
गूंथ ही गुलाब के रे, मैंने पहनाएँ बहु हार;
लेकर वारणा रे, चरण पडी मैं बारंबार...३
मैंने दिया आदर से रे, चाकला बैठन को करी प्यार;
पूछे प्रीत से रे, सखी मैंने सभी समाचार...४
कहो हरि कहाँ हुते रे, कहाँ से आए धर्मकुमार;
सुंदर शोभते रे, अंग ही धारित है श्रृंगार...५
पहना प्रीत से रे, सुरंगी सुथना अति सुखदेन;
नाडी हीर की रे, देख ही तृप्त न होवत नैन...६
वे पर ओढिया रे, गूढ रेंटा देखन लाग
सुन सखी उस समें रे, धन धन निरखे वो हो निहाल...७

मस्तक ऊपरे रे, बाँधी पगड़ी अति अमूल्य;
कोटिक रवि शशी रे, सो नहीं आये उसके तुल्य...८
रेशम छोर का रे, कर में सोहत है रूमाल;
प्रेमानंद तो रे, ए छबि निरखी भया निहाल...९

पद - २

सखियाँ सुनो कहुं रे, शोभा बरनूँ ता कि अपार;
सुमिरन मूर्ति का रे, उर में उपजावै अति प्यार...१
पहने उस समें रे, श्रीहरि तन पे अलंकार;
निरखे जैसे मैने रे, तैसे बरनूँ करी के प्यार...२
बरास कपूर के रे, पहने हिरदै सुंदर हार;
तुररे पाग में रे, तिन पर मधुकर करे गुँजार...३
बाहु भुज बंध रे, हाथ में कर्पूर के शोभित;
कडे कपूर के रे, देखकर चोरे सब के चित्त...४
अंग ही अंग में रे, उठती अत्तर की बहु फोर;
चोरे चित्त को रे, हसते कमल नैन की कोर...५

हँसते हेत से रे, सबको देते सुख आनंद;
रसरूप मूरति रे, श्रीहरि केवल करुणाकंद...६
अद्‌भुत उपमा रे, कहते शेष न पावै पार;
मूर्ति धरन से रे, जानो आया रस श्रृंगार...७
प्रीति बचन में रे, नैनन छलके करुणापुर;
अंग ही अंग में रे, मानो दमकत अगनित सूर...८
करते बात में रे, बोले अमृत सरीखे बैन;
प्रेमानंद के रे, देख ही तृप्त न होवत नैन...९

पद - ३

बोले श्रीहरि रे, सुनिए नरनारी हरिजन;
मुझे एक बारता रे, सबको सुनवाने का है मन...१
मेरी मूरति रे, मेरे लोक, भोग व मुक्त;
सब ही दिव्य हैं रे, जहाँ तो देखन की है जुक्त...२
मेरा धाम है रे, अक्षर अमृत जिसका नाम;
सब ही सामर्थी रे, शक्ति गुणगण से अभिराम...३

अति तेजोमय रे, रवि शशि कोटिक वारि जाई;
शीतल शांत है रे, तेज की उपमा नहीं दी जाई...४
उसमें मैं रहूँ रे, द्विभुज दिव्य सदा साकार;
दुर्लभ देव को रे, मेरा कोई न पावै पार...५
जीव, ईश्वर का रे, माया काल पुरुष प्रधान;
सबको बस करूँ रे, सबका प्रेरक मैं भगवान...६
अगनित विश्व की रे, उत्पत्ति पालन प्रलय होई;
मुझ मरजी बिना रे, तिनका तोड़ सके नहीं कोई...७
यूँ मुझे जानिए रे, मेरे आश्रित सब नरनारी;
मैंने तुम सामने रे, वार्ता सत्य कही है मेरी...८
मैं तुम सब के लिए रे, आयो धाम से धरि देह;
प्रेमानंद का रे, बालम बरसै अमृत मेह...९

पद – ४

हरिजन सुनो सभी रे, मेरी वार्ता परम अनूप;
परम सिद्धांत जो रे, सबको हितकारी सुखरूप...१

सब हरिभक्त को रे, पाना हो यदि मेरा धाम;
करो मुझ सेवना रे, तुम शुद्ध भाव होइ निष्काम...२
सब हरिभक्त को रे, रहना है जो मुझ पास;
तो तुम छोड़ना रे, मिथ्या पंचविषय की आस...३
मुझ बिन जानिये रे, दूजा मायिक सब आकार;
प्रीति छोड़ना रे, झूठे जानि कुटुम्ब परिवार...४
सब तुम पालना रे, उर दृढ़ करि के मेरे नियम;
तुम पर रीझेंगे रे, धर्म व भक्ति करेंगे क्षेम...५
संत हरिभक्त को रे, दीन्हा यूँ शिक्षा उपदेश;
लटके हाथ से रे, करते शोभित नटवर वेश...६
निज जन ऊपरै रे, अमृत बरसै आनंद कंद;
जैसे सभी औषधि रे, प्रेम सुँ पोषत पूरण चंद...७
शोभित संत में रे, जैसे उडुगण में उडुराज;
ईश्वर उदय भए रे, कलि में करने को जन काज...८
यहि पद सीख के रे, गायेंगे सुनेंगे धरि प्यार;
प्रेमानंद का रे, स्वामी लेंगे उनकी सार...९

६. गोड़ी

संत समागम कीजे,
हो निशदिन...टेक
मान तजी संतन के मुख से,
प्रेम सुधारस पीजे...१
अंतर कपट मेट के अपना,
ले उनकुं मन दीजे...२
भवदु:ख टले बले सब दुष्क्रीत,
सब विधि कारज सीजे...३
ब्रह्मानंद कहे संत की सोबत,
जन्म सुफल करी लीजे...४

पद - २

संत परम हितकारी,
जगतमांही...टेक
प्रभुपद प्रगट करावत प्रीति,
भरम मिटावत भारी...१

परमकृपालु सकल जीवन पर,
हरि सम सब दुःखहारी...२
त्रिगुणातीत फिरत तनु त्यागी,
रीत जगत से न्यारी...३
ब्रह्मानंद कहे संत की सोबत,
मिलत हे प्रगट मोरारी...४

७. संध्या आरती-धुन्य-अष्टक

१. संध्या आरती

जय सद्गुरु स्वामी, प्रभु जय सद्गुरु स्वामी
सहजानंद दयालु(२) बलवंत बहुनामी...टेक
चरण सरोज तुम्हारे, वंदुं कर जोरी...(२)
चरण में शिर धरन से(२) दुःख दिये तोड़ी...जय
स्वामिनारायण सुखदाता, द्विजकुल तनु धारी...(२)
पामर पतित उद्धारे(२) अगनित नरनारी...जय
नित्य नित्य नौतम लीला, करते अविनाशी...(२)
अडसठ तीरथ चरण में(२) कोटि गया काशी...जय

पुरुषोत्तम प्रगट का, जो दर्शन करेंगे...(२)
काल कर्म से छूटके(२) कुटुंब सह तरेंगे...जय
यह अवसर करुणानिधि, करुणा बहु कीनी...(२)
मुक्तानंद कहे मुक्ति(२) सुगम ही कर दीनी...जय

२. धुन्य

सहजानंद घनश्याम जय जय घनश्याम (२)
हरिकृष्ण घनश्याम जय जय घनश्याम (२)
स्वामिनारायण हरे स्वामिनारायण हरे (२)
स्वामिनारायण हरे (२)
हरिकृष्ण हरे जय जय हरिकृष्ण हरे (२)
जय जय हरिकृष्ण हरे (२)
घनश्याम हरे जय जय घनश्याम हरे (२)
जय जय घनश्याम हरे (२)
नीलकंठवर्णी जय जय नीलकंठवर्णी (२)
जय जय नीलकंठवर्णी (२)
न्यालकरण जय न्यालकरण (२)

वृषनंदन जय न्यालकरण(२)
सहजानंद जय सहजानंद(२)
आनंदघन जय सहजानंद(२)
स्वामिनारायण स्वामिनारायण(४)
स्वामिनारायण स्वामिनारायण(८)

श्री स्वामिनारायण स्तोत्र

ऊर्ध्व तथाधो नहि यस्य मानम्,
तस्मिन् महोधामनि राजमानम् ।
मुक्तव्रजानामधिराजमानम्,
श्री स्वामिनारायणमा नमामि ॥ १ ॥
ब्रह्मांड संदोहविभासिकान्तिम्,
नैकात्मकल्याणनिगूढ़कान्तिम् ।
मनुष्यरूपार्पित दिव्य शांतिम्,
श्री स्वामिनारायणमा नमामि ॥ २ ॥
मनुष्यरूपं प्रतिमा स्वरूपम्,
तथाक्षरे धामनि दिव्यरूपम्,

यस्यात्स्यभिन्नम् कमनीयरूपम्,
श्री स्वामिनारायणमा नमामि ॥ ३ ॥
दिव्याम्बराभूषण भूषितांगम्,
दिव्याद्वितीयाकृति मञ्जुलांगम् ।
दिव्यत्व संपादक संगिसंगम्,
श्री स्वामिनारायणमा नमामि ॥ ४ ॥
स्व स्वामिनारायण नाम मंत्रं,
स्वयं दिशन्तं भव पारयंत्रम् ।
प्रौढ प्रतापाश्रित लोक तंत्रं,
श्री स्वामिनारायणमा नमामि ॥ ५ ॥
योगाद्विनाकारित सत्समाधिं,
सद्भक्तसंघात विनाशिताधिम् ।
संप्रापयंतं तमनाद्युपाधिं,
श्री स्वामिनारायणमा नमामि ॥ ६ ॥
सर्वावतारान्द्र विलापयंतम्,
सर्वावतारित्वमहो धरन्तम् ।
स्वराडिति स्वान् परिदर्शयम्,
श्री स्वामिनारायणमा नमामि ॥ ७ ॥

मायेश ब्रह्माक्षर संघबीजम्,
ये अनादिमुक्ता अर्पितेषु बीजम् ।
त्वं सर्वदात्यंतिक मुक्तिबीजम्,
श्री स्वामिनारायणमा नमामि ॥ ८ ॥
प्रत्यक्ष एवास्मि सदेति भानं,
दत्वा स्वकेभ्यो निजमूर्ति दानम् ।
यावद् रवीन्दु प्रगट प्रमाणं,
श्री स्वामिनारायणमा नमामि ॥ ९ ॥

४. प्रार्थना

निर्विकल्प उत्तम अति, निश्चय तव घनश्याम;
महात्म्यज्ञानयुक्त भक्ति तव, एकांतिक सुखधाम...१
मोहि में तव भक्तपनो, तामें कोई प्रकार;
दोष न रहे कोई जात को, सुनियो धर्मकुमार...२
तुम्हारो तव हरिभक्त को, द्रोह कबु नहि होय;
एकांतिक तव दास को, दीजे समागम मोय...३
नाथ निरंतर दर्श तव, तव दासन को दास;
एही मागुं करी विनय हरि, सदा राखियो पास...४

हे कृपालो ! हे भक्तपते ! भक्तवत्सल ! सूनो बात;
दयासिंधो ! स्तवन करी, मागुं वस्तु सात...५
सहजानंद महाराज के, सब सत्संगी सुजाण;
ताकुं होय दृढ़ वर्तनो, शिक्षापत्री प्रमाण...६
सो पत्री में अति बड़े, नियम एकादश होय;
ताकी विक्ति कहत हुं, सुनियो सब चित्त प्रोय...७
हिंसा न करनी जंत की, परत्रिया संग को त्याग;
मांस न खावत मद्य कुं, पिवत नहि बडभाग...८
विधवा कुं स्पर्शत नहि, करत न आतमघात;
चोरी न करनी काहु की, कलंक न कोई कुं लगात...९
निंदत नहि कोई देव कुं, बिन खपतो नहि खात;
विमुख जीव के वदन से, कथा सुनी नहि जात...१०
एही विधि धर्म के नियम में, बरतो सब हरिदास;
भजो श्री सहजानंद पद, छोड़ी और सब आस...११
रही एकादश नियम में, करो श्री हरिपद प्रीत;
प्रेमानंद कहे धाम में, जाओ निःशंक जगजीत...१२

५. स्तुति गान
(राग : शार्दूलविक्रीडित)

आये अक्षरधाम के यह राजा,
सर्वोपरी श्रीहरि,
सहजानंद घनश्याम नाम धारी,
श्रीजी दया दिल धरी;
जानी बिरद नाथ सनाथ करने
पृथ्वी परे विचरे,
खम्मा श्री घनश्याम तुम्ही को खम्मा,
रसबस हमें कर दिये...१
झळहळ झळहळ तेज में बिराजे,
हरिकृष्ण करुणानिधि,
जिसने भूपर दर्शन दान देकर,
संभाल सबकी लीनी;
धरिया पूर्ण प्रतापी नाम खुदने,
श्री स्वामिनारायण सदा,
वह नाम से अगनित जीव तारे,
टाली सभी आपदा...२

ऐसे श्रीजी समर्थ मोक्षदाता,
कर्ता नियंता तुम्ही,
हे सहजानंद ! पूर्णकाम स्वामी,
जाने प्रभुजी हम ही;
महिमा दिव्य अपार आप केरा,
है श्याम सर्वोपरी,
मांगे हम वरदान हाथ जोड़ी,
वह दीजिये श्रीहरि...३
कहते क्या सुखदेण वेण व्हाला,
मुक्तपति राज को,
आये दास अनेक आप शरण में
उनके किये काज को;
प्रसराया ही प्रताप दिग्विजय का,
डंका दिये है बहु,
संशय छेद भेद सबके,
आश्रित किये निज के ही...४

प्रगटे जीवनप्राण अबजीबापा,
अहोकृपा यह धन्य घड़ी,
श्रीजी संकल्पमूर्ति हो ही आप,
यह बात की हा पड़ी;
स्थिति मुक्त अनादि केरी आप,
सभी जनों को दीनी,
दर्शन स्पर्श जिमी जिमाके सबको,
मूर्ति की ल्हानी कीनी...५
अपरंपार अपार करी कृपा,
सब जीव को सुखिया किया,
देकर मूर्ति ज्ञान दान बहु जीव को,
मुक्त अनादि किये;
ऐसी दिव्य अनूप सौम्य मूर्ति,
अपार सुख से भरी,
उत्तम स्थिति अनादिमुक्त केरी,
आपने प्रथम सुगम करी...६

हे बापा, सुख मूर्तिदाता श्रीहरि का हो,
तेजोमय प्यारे तुम्ही,
अगणित गुन अपार आप महिमा,
कैसे जान सके हम ही;
अति उत्तम नवीन दिव्य सुख को,
सहज में कृपाळु दिलाइए,
रसबस ओतप्रोत श्रीजीरूप करी,
मुज देहभाव टलाइए...७
हे स्वामीय ! समर्थ अर्थ सब ही,
सब ज्ञान के सुगम किये,
सहकर कष्ट अठारह साल पुरे,
ज्ञानामृत खुल्ले किये;
अन्वय व व्यतिरेक छेक छूट्टे,
सुगम करके समझाये है,
वह कारण अनंत जीव सहज में
हरि मूर्ति को पामे है...८
श्रीजी संकल्प स्वरूप आप स्वामी,
सिद्धांत में नीडर शूरे,

कारण सत्संग रूप मूर्ति स्थापकर,
खूट ज्ञान के गाड़े खरे;
हे स्वामी, सुख मूर्तिदाता श्रीहरि का हो,
पूरो हमारी आसजी,
वह कारण नित्य नमी है स्वामी,
श्री ईश्वरचरणदासजी...९
हे स्वामी, तव दिव्य रूप पेखी,
सब जीव को शांति मिले,
जानो सिंधु शांत ज्ञान गंभीर अति,
जिस में मूर्ति मोज मिले;
हरते फिरते प्रीत से सभी जन परे,
करते ही मूर्ति प्रकाशजी,
नमी है नित्य अनादिमुक्त स्वामी,
श्री वृंदावनदासजी...१०
हे स्वामी ! सदा ही दिव्य मूर्ति,
श्रीजी स्वरूप में रहे,
यह कारण शुभ शांत दिव्य पेखी,
मुनि नाम से प्रसिद्ध भये;

कर जोड़ बिनती करूँ नमी नमी,
पूरो ही मूर्ति प्यासजी,
ऐसे सिद्ध अनादिमुक्त सद्गुरु,
श्री केशवप्रियदासजी...११

(चलती)

मुक्त हो के दासभाव से, दिव्य सुख को माँगी है,
अहोनिश बापा, दिव्यरूप से, मूर्ति में विरामी है;
दया करो हरि दीन पर, माँगू मैं नमी नमी,
यह प्रार्थना स्वीकारो जीवन, श्रीजी एवं बापा मिली ।

(स्रग्धरा वृत्त)

दिव्य श्रीजीस्वरूप, रसबस है मांही,
मुक्त अनादि दिव्य,
भोग सब ही है दिव्य, प्रगट प्रभु के,
सुख है नित्य दिव्य;
अंग अंग में तेज, झळहळ झलकत,
धाम है उनका दिव्य,
दिव्य जानो क्रियाएँ सभी श्रीजी की,
तुरंत वो हो जाए दिव्य...१
श्रीजी आज पधारे, कीनी बहुत कृपा,

मूर्ति में रखने को,
जीवों को देख दुःखी ही, कीनी अति करुणा,
आपत्ति हरने को,
व्हाला के रोमरोम में अति अति सुख है,
उन्हीं को पाने में,
वंदुं ध्यावुं श्रीहरि को, निशदिन समरुं,
सुखमें डूब जाने को...२

८. पोढनियां

पोढ़ो पोढ़ो सहजानंद स्वामी,
अँखिया में नींदियाँ भराई रे...पोढ़ो १
हां रे तुम सिर से साफा उतारो रे,
पींछुं फूलों की टोपी❖धारो रे...पोढ़ो २
हां रे तुम जरकसी जामा उतारो रे,
पींछुं हीरतारी धोती धारो रे...पोढ़ो ३
हां रे तुम कटि़ का पटका छोडो रे,
पींछुं फूलों की पिछौरी●ओढो रे...पोढ़ो ४
हां रे पोढ़े प्रेमानंद के स्वामी रे,
सखी निरखी आनंद पाई रे...पोढ़ो ५

सर्दी की मौसम में (❖) बनात की टोपी, (●) शाल–दुसाला

९. स्वाभाविक चेष्टा

१. लीलाचिंतामणि के पद

पद - १

प्रथम श्रीहरि को रे, चरणे शीश नमाऊँ;
नौतम-लीला रे, स्वामिनारायण की गाऊँ...१
महा मुनिवर रे, एकाग्र करके मन को;
जिनके कारण रे, सेवे हमेश वन को...२
साध ही आसन रे, ध्यान में मूर्ति धारे;
हरि की चेष्टा रे, स्नेह सहित सँभारे...३
सहज स्वाभाविक रे, प्रकृति पुरुषोत्तम की;
सुन के सजनी रे, भीति मिटावे जम की...४
हरि की लीला रे, अति प्यार से गाऊँ;
पावन कीजे रे, मति मेरी मुद पाऊँ...५
सहज स्वाभाविक रे, बैठें हो हरि जब ही;
तुलसी-माला रे, कर में फेरे तब ही...६
विनोद करते रे, राजीव नैन हैं सुंदर;
कोई हरिभक्त की रे, माँग माला लेकर...७

दोहरी रखकर रे, मनके दो-दो जोड़े;
खींच घुमावे रे, कोई माला तोड़े...८
बातों में ही रे, हँसी विनोद करते;
दोनों कर में रे, माला लेकर मलते...९
मूँद कभी तो रे, नेत्रकमल को स्वामी;
प्रेमानंद कहे रे, ध्यान धरे बहुनामी...१०

पद - २

सुनो सहेली रे, लीला सहजानंद की;
सुनते सुख उपजे रे, मूर्ति में हो रसबस की...१
नेत्रकमल को रे, खूला रखे श्रीहरि;
ध्यान धरके रे, बैठे हरि अवतारि...२
कबहूँ चौंकी रे, तुरत ध्यान से जागे;
मूरत देखी रे, जन्म-मरण दुःख भागे...३
निज के सन्मुख रे, सभा खचाखच हो जब,
संत-हरिजन रे, अनिमेष निरखे तब...४
ध्यान धरके रे, बैठे नैना मूँद;
तृप्त ना होते रे, संत-भक्तों के वृंद...५

गावे कीर्तन रे, संत बजाकर बाजा;
उनको निरखी रे, मगन होय महाराजा...६
उनके साथ रे, चुटकी बजाकर गावे;
संत-हरिजन रे, निरख निरख मुद पावे...७
कबहूँ संत रे, गाते ताली बजावे;
संग हरिवर रे, ताली बजाकर गावे...८
सन्मुख साधु रे, कीर्तन मीठे गाते,
हरि के आगे रे, कथा कोई सुनाते...९
स्वयं कथारस रे, वचनामृत बरसाते;
प्रेमानंद कहे रे, श्याम खिसकते आते...१०

पद - ३

मनुष्य लीला रे, करते मंगलकारी;
भक्त सभा में रे, बैठे भवभयहारी...१
जिनको देख रे, मिटती जग आसक्ति;
ज्ञान-वैराग्य रे, धर्म सहित जो भक्ति...२
उस संबंधी रे, वार्ता करते भारी;
हरि समझाते रे, निज जन को सुखकारी...३

योग व सांख्य रे, पंचरात्र-वेदांत;
उन शास्त्रों का रे, कहत सार-सिद्धांत...४
जब कोऊ हरिजन रे, देश-देश से आवे;
उत्सव ऊपर रे, पूजा बहुविध लावे...५
जानकर अपने रे, सेवकजन अविनाशी;
उनकी पूजा रे, ग्रहण करे सुखराशि...६
निज भक्तों को रे, सुख दे श्याम सुजाण;
ध्यान कराते रे, खींचते नाडी-प्राण...७
ध्यान में से रे, जगाते निज जन को;
देह में लाते रे, प्राण-इन्द्रिय मन को...८
संत-सभा में रे, बैठे जब अविनाश;
किसी हरिजन को रे, बुलवाते निज पास...९
पहली उँगली रे, कर नयनों की सैन;
प्रेमानंद कहे रे, पुकार दे भगवान...१०

पद - ४

मोहनजी की रे, लीला अति सुखकारी;
आनंद देती रे, सुनते न्यारी न्यारी...१

करते बातें रे, कभी संत के साथ;
गुच्छ गुलाब के रे, मसलते दोऊ हाथ...२
शीतल देखी रे, नींबू, गुलाब-माला;
दबाए रखते रे, आँखों पर वृषलाला...३
अति प्रसन्न रे, हरिवर खुद जब होवे;
वार्ता करते रे, कथा बीच में सुख देवे...४
सुनते कीर्तन रे, सोचमग्न हो जब ही;
पूछने आवे रे, जिमने को कोई तब ही...५
हार चढ़ावै रे, पूजा करने आते;
उनके ऊपर रे, चिढ़ बहुत झुंझलाते...६
कथा-श्रवण में रे, 'हरे हरे' प्रभु बोले;
मर्म कथा का रे, सुन उमंग में ड़ाले...७
अन्य क्रिया में रे, कथा-भान अनुसरते;
कभी अचानक रे, जिमते 'हरे' उचरते...८
उसका सुमरन रे, हो अपने को जब ही;
भक्तों सन्मुख रे, देख हँसते तब ही...९

यूं हरि नित नित रे, आनंद रस बरसावे;
ये लीला रस रे, देख प्रेमानंद गावे...१०

पद - ५

सुन ओ सजनी रे, दिव्य स्वरूप अवतारी;
करे चरित्र रे, मनुष्य विग्रह धारी...१
देत दर्शन रे, मनुष्य जैसे आज;
रूप अनुपम रे, निज मुक्तों के सुख काज...२
पलंग ऊपर रे, बिराजे घनश्याम;
कभी बिराजे रे, चाकले पर सुखधाम...३
कभी गद्दी रे, छादन युक्त नवीन;
देख बिछाई रे, हरि होते आसीन...४
पलंग ऊपर रे, तकिया पड़ा निहार;
उस पर राजे रे, हरिवर पालथी मार...५
बहुत बिराजे रे, तकिया टेकन लेते;
खेस बाँध रे, घुटने में सुख देते...६
कभी अति राज़ी रे, होते श्री घनश्याम;
संत-हरिजन को रे, भेंटे सुख के धाम...७

कभी सिर ऊपर रे, रखते दोनों हाथ;
छाती पर निज रे, चरण कमल दे नाथ...८
कभी तो देते रे, राज़ी हो तुररे हार;
कभी कभी देते रे, अपने वस्त्र उतार...९
कभी हरि देते रे, प्रसादी के थाल;
प्रेमानंद कहे रे, भक्तों के प्रतिपाल...१०

पद - ६

चरित्र ऐसे रे, करते पावनकारी;
नित्य सुमर के रे, गाते मुक्त संभारी...१
कभी जिह्वा को रे, दाँतों तले दबावे;
दायें-बायें रे, भक्त सभी मुद पावे...२
छींक जब आवे रे, तभी रूमाल लेकर,
छींक खाते रे, रूमाल आड़ देकर...३
विनोद करते रे, हँसे बहुत घनश्याम;
मुख पर आड़े रे, रूमाल दे सुखधाम...४
कभी सभा में रे, कथा करे हरिवर;
ऐसी आदत रे, बटते रूमाल छोर...५

अति दयालु रे, स्वभाव है स्वामी का;
परदुःखहारी रे, दुःखियों के हामी का...६
किसी को दुःखी रे, देखी धैर्य गवाँते;
दया दरसाकर रे, अतीव ही अकुलाते...७
अन्न-धन-वस्त्र रे, देकर दुःख निवारे;
राज़ी होकर रे, करुणादृष्टि निहारे...८
बायें कंधे रे, दुकूल आड़े रखकर;
हरिवर चलते रे, ले रूमाल दायें कर...९
बायाँ हाथ रे, कभी कटि पर रखते;
प्रेमानंद कहे रे, मोह देने हरि चलते...१०

पद - ७

नित नित नौतम रे, लीला करे हरिराय;
गाते सुनते रे, हरिजन राजी होय...१
सहज स्वभाव से रे, तेज गति चलने को;
हेत बरसा कर रे, पुकारते भक्तों को...२
कभी सवारी रे, करनी हो घोड़े पर;
कभी संतों को रे, परोसने हो तत्पर...३

बायें कन्धे रे, लिये दुपट्टा नाथ;
दुकूल बांधे रे, कसिके कटि संगाथ...४
लाडू परोसे रे, जिलेबी घनश्याम;
खाद्य पदारथ रे, ले ले उसका नाम...५
फिरे पंगत में रे, बार बार महाराज;
संत-हरिजन को रे, परोसने के काज...६
श्रद्धा भक्ति अति रे, सबको हरि परोसे;
किसी के मुँह में रे, हँसते लड्डू ठूँसे...७
पिछली रात्रि रे, चार घड़ी हो शेष;
शय्या त्यागे रे, दातुन करे हमेश...८
नहाने बैठे रे, नाथ पालथी मार;
कर ले लोटा रे, जल ढोले करतार...९
कोरे पट से रे, पोंछे हरि शरीर;
प्रेमानंद कहे रे, निरखे भक्त अधीर...१०

पद - ८

अतीव सोहे रे, नहा खड़े सुख देते;
गीले पट को रे, जाँघों बीच निचोते...१

पैर जाँघो को रे, स्वयं पोंछते हरिवर;
कोरे पट को रे, पहने अतीव तनकर...२
ओढ़ उपरणी रे, सुंदर रेशमदारी;
आवे जिमने रे, पाँव पादुका धारी...३
सर पर उपरणी रे, ओढके जिमने बैठे;
कान खुले रखे रे, मुज को आनंद उठे...४
बायें पाँव रे, पालथी मारे राज;
उस पर बायाँ रे, रखते कर महाराज... ५
दायाँ पैर रे, खड़ा रखे घनश्याम;
उस पर दायाँ रे, कर धरते सुखधाम...६
जिमते भोजन रे, सर्वोपरी भगवान;
बार बार आदत से रे, करते हैं जलपान...७
स्वादु चीज़ रे, हरि की जेही पसंद;
सन्मुख राजे रे, निज भक्तों का वृंद...८
उनको देकर रे, जिमते श्रीहरि प्यारे;
ऐसी मूरत रे, हरिजन मन में धारे...९

जिमते फेरे रे, उदर पर निज हाथ;
डकार खावे रे, प्रेमानंद के नाथ...१०

पद - ९

अचवन करे रे, तृप्त होई भगवंत;
रूपा-सलाई रे, लिये कुरेदे दंत...१
मुखवास लेकर रे, पलंग बिराजे नाथ;
पूजा करते रे, हरिजन जोड़े हाथ...२
पलकों पर रे, पेच लेते हरिवर;
साफा बांधे रे, सुंदर छोगला रखकर...३
वर्षाऋतु को रे, शरदऋतु को जान;
घेला नदी के रे, निर्मल नीर बखान...४
संत-हरिजन को रे, संग लिए घनश्याम;
नहाने पधारे रे, घेला में सुखधाम...५
बहु जलक्रीड़ा रे, करते जल में नहाते;
जल में ताली रे, देकर कीर्तन गाते...६
नहा के बाहर रे, करे वस्त्र-परिधान;
घोड़े बैठे रे, घर आवे भगवान...७

पावन महिमा रे, चलते हरिजन गाते;
हरि को निहाल रे, उमंग उर न समाते...८
गढ़पुर वासी रे, देखत जब जगआधार,
सुफल निज करते रे, नैना बारमबार...९
आकर बिराजे रे, ओसारे बहुनामी;
पलंग ऊपर रे, प्रेमानंद के स्वामी...१०

पद - १०

निज सेवक को रे, सुख देने के काज;
स्वयं प्रकटे रे, पुरुषोत्तम महाराज...१
प्रांगण में ही रे, सभा किये बिराजे;
पूरण शशि रे, उडुगण में ज्यों राजे...२
ब्रह्मरस बरसत रे, तृप्त करे हरिजन को;
पोढ़े रात्रि रे, जिमके विशुद्ध अन्न को...३
दो अंगुलियाँ रे, तिलक करे ज्यूँ श्याम;
ललाट-बीच रे, घिसे खड़ी घनश्याम...४
सोते सोते रे, माला माँग लेकर;
दाये हाथ रे, नित फेरे मन देकर...५

ऐसा नियम रे, चूक कभी न होती;
धर्मकुंवर की रे, ये है सहज प्रकृति...६
भर निद्रा में रे, पोढ़े हो मुनिराय;
कोई अजान रे, लेश अगर छू जाए...७
तब तो चौंक रे, जाग जाते घनश्याम;
'कौन है ?' पूछे रे, सेवक को सुखधाम...८
ऐसी लीला रे, हरि की अनंत अपार;
मैंने गाई रे, अल्पमति अनुसार...९
जो कोई प्रीत से, सीखें, सुनें, गावें;
प्रेमानंद के रे, स्वामी प्रसन्न होवे...१०

राग – गरबी

समीप आओ श्याम स्नेही,
सुंदरवर जोउँ व्हाला;
जतन कर ही जीवन मेरे,
जीव में पिरोऊँ व्हाला...१
चिह्न अनुपम अंग-अंग के,
ध्यान से संभारूँ व्हाला;

नखशिख निरखूँ नौतम मेरे,
अंतर में उतारूँ व्हाला...२
अरुण कमल सम जुगल चरण की,
शोभा अतीव सुंदर व्हाला;
चिंतन करने मेरे मन की,
वृत्ति अतीव आतुर व्हाला...३
प्रथम तो मैं चिंतवन करूँ,
सुंदर सोलह चिह्न व्हाला;
ऊर्ध्वरेखा सोहे सुंदर,
अतीव है नवीन व्हाला...४
अँगूठे और अंगुली बीच,
पसार होकर आई व्हाला;
एडी-तल के दोनों बाजू,
भक्तको मन भाई व्हाला...५
जुगल चरन में कहूँ मनोहर,
चिह्न उनके नाम व्हाला;
पवित्र मन से सुमरन करते,
नष्ट होता काम व्हाला...६

अष्टकोण व ऊर्ध्वरेखा,
स्वस्तिक, जामुन, जव व्हाला;
वज्र अंकुश केतु पद्म है,
दायें पद चिह्न नव व्हाला...७
त्रिकोण, कलश, गोपद सुन्दर,
धनुष व मीन व्हाला;
अर्धचन्द्र व व्योम सात हैं,
बायें पद में चिह्न व्हाला...८
दायें चरन में अंगूठे के,
नख में एक चिह्न व्हाला;
जिसको निरखे जो कोई भक्त,
होता सुख में लीन व्हाला...९
अंगूठे के समीप सुंदर,
तिल एक नौतम धारूँ व्हाला;
कहत प्रेमानंद प्यारी मूरत,
निरखूँ प्राण बिछाऊँ व्हाला...१०

(राग - धोल) पद - १

अब मेरे व्हाला को नहि रे बिसारूँ रे;
साँसउसाँस ही नित्य सँभारूँ रे...१
पड़ा मेरा सहजानंद से पाला रे;
अब तो मैं केसे छिपाऊँ व्हाला रे...२
मिला मुझे हरिवर वरने का मौका रे;
ये वर धन से मिले ना अनोखा रे...३
यह वर कृपा बिना नव पावे रे;
यह स्नेह लगन बिना नव आवे रे...४
दुर्जन मनमाना चाहे सो कहना रे;
स्वामी मेरे अंतर के भीतर रहना रे...५
अब मैंने पूरण पदवी पायी रे;
मिले मुझे निष्कुलानंद के स्वामी रे...६

पद - २

अब मेरे व्हाला के दर्शन काज,
हरिजन आवे हजारो हजार...१

पलंग पे बिराजे सहजानंद स्वामी,
पूरण पुरुषोत्तम अंतरजामी...२
सभा मध्य बैठे मुनि के वृंद,
बीच शोभे तारे मढ़ा ज्यूं चंद्र...३
दुर्गपुर खेल मचा अति भारी,
संग रमे साधु एवं ब्रह्मचारी...४
ताली बजे उपरती अति सारी,
धुन्य मची चौदह लोक से न्यारी...५
पगलडी में छोगला अति सोहे,
देख देख हरिजन के मन मोहे...६
पधारे व्हालो सभी सुख के राशि,
सहजानंद स्वामी अक्षरधाम के वासी...७
मिट गई मेरी जन्मो जनम की खामी,
मिले मुझे निष्कुलानंद के स्वामी...८

राग – विहारी

पोढे प्रभु सकल मुनि के श्याम;
स्वामिनारायण दिव्य मूर्ति(२),
संतन को विश्राम...०ध्रुव
अक्षर पर आनंदघन प्रभु,
कियो है भूपर ठाम;
जेही मिलत जन तरत माया(२),
लहत अक्षरधाम...पोढे०१
शारद शेष महेश महामुनि,
जपत जेही गुननाम;
जास पदरज शीश धरी धरी(२),
होवत जन निष्काम...पोढे०२
प्रेम के पर्यंक पर प्रभु,
करत सुख आराम;
मुक्तानंद नित्य चरण ढिग गुन(२),
गावत आठुं जाम...पोढे०३

राग – गरबी

रे श्याम तुम सच्चा धन मानूँ,
दूजा सभी दुःखदायक जानूँ...०ध्रुव
रे तुम बिना सुख संपत्ति कहावे,
वो तो सब महादुःख उपजावे;
अंते जाके काम कोई नावे...रे श्याम ०१
रे मूरख लोक मरे भटकी,
झूठों संग हां रे शिर पटकी;
उससे मेरी मन वृत्ति अटकी...रे श्याम ०२
है अखंड अलौकिक सुख तेरा,
वो मूरत देख मेरा मन हेरा;
धरा धन सब तुम पर वारि...रे श्याम ०३
रे ब्रह्मा से कीट तक सब देखा,
झूठा सुख जानी के बिगोया;
मुक्तानंद मन तुम संग मोहा...रे श्याम ०४

राग – गरबी

पद – १

वंदूँ सहजानन्द रसरूप,
अनुपम सार को रे लोल;
जिन्हें भजते छूटे फंद,
करे भव पार को रे लोल...१
सुमरूँ प्रगट रूप सुखधाम,
अनुपम नाम को रे लोल;
जिन्हें भव-ब्रह्मादिक देव,
भजे तजी काम को रे लोल...२
जो हरि अक्षरब्रह्म आधार,
पार कोई नहीं लहे रे लोल;
जाको शेष सहस्रमुख गाई,
निगम नेति कहे रे लोल...३
बरनूँ सुन्दर रूप अनुप,
जुगल चरण में नमी रे लोल;
नखशिख प्रेमसखी के नाथ,
रहो उर में रमी रे लोल...४

पद - २

आओ मेरे मोहन प्यारे लाल,
देखूँ तेरी मूरति रे लोल;
जतन करी रखूँ रसीले राज,
बिसरूँ नहीं उर से रे लोल...१
मन मेरा मोहा मोहनलाल,
पग्गड़ के पेंच में रे लोल,
आओ पास छोगला खोंसूँ छेल,
निरखूँ मैं हेत से रे लोल...२
व्हाला तेरा चमके सुंदर भाल,
तिलक सोहे अति रे लोल;
व्हाला तेरे बायें कान में तिल,
खींचे मुझ मन-मति रे लोल...३
व्हाला तुझ तीखे भ्रकुटि-बाण,
हृदय मुझ कोरते रे लोल;
नयन तुझ प्रेमसखी के नाथ !
चित्त मेरे चोरते रे लोल...४

पद - ३

व्हाला मुझे बस कर ली वृषराज,
प्यारे तेरे प्यार में रे लोल;
मन मेरा तरसे दर्शन काज,
बिन्दिया गाल में रे लोल...१
व्हाला तुझ नासिका प्यारी नाथ !
अधरबिंब लाल है रे लोल;
छेला मेरे प्राण करूँ कुरबान,
मनोहर चाल में रे लोल...२
व्हाला तेरे दंत अनार का बीज,
चातुर्यता चाव में रे लोल;
व्हाला मेरे प्राण हरते नाथ !
मधुर मुख गान में रे लोल...३
व्हाला तुझ हँसी हरे मुझ चित्त,
अब कुछ रुचे नहीं रे लोल;
मन मेरा प्रेमसखी के नाथ !
घूमे तुम पीछे सही रे लोल...४

पद – ४

रसीले देख मनोहर कंठ,
सुंदर रेखावलि रे लोल;
व्हाला मेरा मन ललचे मिलने को,
चित्त जाए चलि रे लोल...१
व्हाला तेरी दायी भुजा के पास,
सुंदर तिल चार दिखे रे लोल;
व्हाला तेरे कंठ बीच तिल एक,
अनुपम उर अति रे लोल...२
व्हाला तेरे उर में बिनगुन हार,
देख अँखियाँ ठरे रे लोल;
व्हाला तेरी मूरत प्रेमी जन,
देख नित ध्यान धरे रे लोल...३
रसिये ! मूर्ति सलोनी देख,
रसिक जन भान भूले रे लोल;
आओ व्हाला ! प्रेमसखी के नाथ !
सुंदरवर छबीले रे लोल...४

पद – ५

व्हाला तेरी भुजा जुगल जगदीश,
देखकर जाऊँ बलि रे लोल;
कर के लटके करते लाल,
आओ मुझ द्वार हरि रे लोल...१
व्हाला तेरी अंगुलियों की रेखा,
नखमणि देख के रे लोल;
व्हाला मेरे चित्त में रखूँ चोरी,
कहु नहीं किसी को रे लोल...२
व्हाला तेरे उर में अनुपम छाप,
देखन जिय तरस रहा रे लोल;
व्हाला मेरे हृदय हरख न माय,
मिलो मुझ कृपा बड़ी रे लोल...३
व्हाला तेरा उदर अति रसरूप,
शीतल सदा नाथजी रे लोल;
आओ पास प्रेमसखी के प्राण,
मिलूँ भुज में भरी रे लोल...४

पद – ६

व्हाला तेरी मूर्ति अति रसरूप,
रसिक जोह जोह जीए रे लोल;
व्हाला तेरे रस के भोगी जन,
छाँस कभी ना पीए रे लोल...१
व्हाला मेरे सुखसंपत घनश्याम,
मूरत मनभावनी रे लोल;
आओ मेरे मंदिर जीवनप्राण,
हँसी के बुलावते रे लोल...२
व्हाला तेरा रूप अनुपम गौर,
मूर्ति मन में प्यारी रे लोल;
व्हाला तेरा जोबन देखन काज,
चित्त चरणे नमूँ रे लोल...३
आओ मेरे रसिया राजीवनैन,
मरम कर बोलते रे लोल;
आओ व्हाला प्रेमसखी के प्राण,
मंदिर मुझ डोलते रे लोल...४

पद - ७

व्हाला तेरा रूप अनुपम नाथ,
उदर शोभे अति रे लोल;
त्रिवली देखूँ सुन्दर छेल,
निकट आओ मुज प्रति रे लोल...१
व्हाला तेरी नाभि नौतम रूप,
गोल गहरी कहूँ रे लोल;
कटि तुझ देख के सहजानंद,
मुद मन में भरूँ रे लोल...२
व्हाला तेरी जाँघ जुगल की शोभा,
मन में निरख रहूँ रे लोल;
व्हाला नित देखूँ पिंडी व एडी,
किसी को ना कहूँ रे लोल...३
व्हाला तेरे चरण कमल का ध्यान,
धरूँ अति मोद से रे लोल;
आओ व्हाला प्रेमसखी के नाथ,
रखूँ मेरे चित्त में रे लोल...४

पद – ८

व्हाला तेरे जुगल चरण रसरूप,
बखानूँ प्यार में रे लोल;
व्हाला अति कोमल है पदकंज,
चोरे चित्त चाल में रे लोल...१
व्हाला तुझ दायें अंगूठे तिल,
नाखुन में चिह्न है रे लोल;
चरण की उंगली में तिल एक,
देखन मन लोभता रे लोल...२
व्हाला तेरे नख की अरुणता देख,
क्षीण भई शशिकला रे लोल;
व्हाला रस चोर चकोर भक्तजन,
देखन चतुर अति रे लोल...३
व्हाला तेरी ऊर्ध्वरेखा में चित्त,
रहो कर दृढ़ अति रे लोल;
माँगे प्रेमसखी कर जोर,
दीजे सुख दास को रे लोल...४

बापाश्री की जीवनी
(राग : पूर्वछायो)

कहूँ अलौकिक वार्ता, प्रभु प्रगट की यह वार;
जो जन श्रवण से सुनते, वो होवत अक्षर पार,
सूरज सहजानंदजी, अंतर्ध्यान हुए जो वार;
दिन बहुत बीत गये, किया संकल्प श्रीजी तेह वार,
सर्वोपरी ज्ञान देने को, मूर्ति में लेने को सार;
मुक्त द्वार से विचरुं मैं, सत्संग में यह वार,
मुक्त जो मेरे जैसे, मेरी मूर्ति में रहनार;
तेह द्वारा सुख देना है, मेरी मूर्ति का निरधार,
जिसने तप तीखा किया, मुजे प्रसन्न करने काज;
पुत्र की इच्छा उनको, पूरा करूँ मनोरथ आज ।

काली तलावड़ी पे नित नाते,
प्रेमीभक्त वह श्रीजी के थे;
दिये दर्शन श्रीजी ने प्यार से,

मागो बाई वचन मुझ पास ।
तभी बाई बोले बोल ऐसे,
चाहिये पुत्र आप ही जैसे;
मेरे मुक्त मेरे जैसे जेही,
लेंगे अवतार तुम घर तेही ।
मेरी मूर्ति में सदा रहनार,
होंगे पुत्र स्वरूप तुम्हारे;
सुन राज़ी हुए भक्तराज,
मेरी इच्छा पूरी हुई आज ।
कच्छ देश में बलदिया गाँव,
कणबी कुल में पांचापिता नाम;
देवबाई पतिव्रता मात,
वहाँ प्रकटे मुक्त साक्षात् ।
संवत उन्नीस सौ एक की तिथि,
मास कार्तिक प्रबोधिनी थी;
दिये दरशन दयालु ने जब ही,
वार चंद्र का तो था तब ही ।
मातपिता को हरख बधाई,

नाम दिया है अबजीभाई;
श्रीजी संकल्प बड़े हुए जब ही,
संत हरिजन ने पहचाने तब ही ।
बडे समजकर ही नमे सभी शीश,
रहतेथे समाधि में अहोनिश;
संत हरिजन जो जोग करते,
उनको सर्वोपरी बातें करते ।
सर्व अवतार के अवतारी,
श्रीजी मूर्ति अलौकिक न्यारी;
सर्व कारण सर्व आधार,
सर्व नियंता दिव्य साकार ।
ऐसे स्वामिनारायण एक,
दूजे सब ही उनके सेवक;
जीवकोटि एवं ईश्वरकोटि,
महाकाल नरनारायणकोटि ।
श्वेतद्वीप के पति है जो ही,
ब्रह्मकोटि वासुदेव वो ही;
वासुदेव के उपरी जो ही,

मूळअक्षर कहलाते वो ही;
मूळअक्षर से बड़े बहु है ही,
एकांतिक रहे सत्संग में ही;
एकांतिक से बड़े जो कहते,
वो तो अक्षरधाम में रहते ।
परमएकांतिक वह कहलाते,
सदा श्रीजी सन्मुख रहते;
उनसे बड़े अनादि कहलाते,
सदा श्रीजी मूर्ति में रहते ।
रसबस वह मूर्ति में रहते,
रोम रोम नवीन सुख लेते;
फिर भी मूर्ति का पार न पामे,
अपार अपार कह के विरामे ।
ओतप्रोत ताणा बाणा होवे,
अनादि जल तरंगवत् होवे;
ऐसे अनादि तो हम है ही,
आये श्रीजी की मूर्ति से ही ।
श्रीजी संकल्प से तो हम आये,

साथ श्रीजी की मूर्ति को लाये;
जिसको चाहिये वो आइये लेने,
हम तो आये हैं मूर्ति देने ।
हमारा तो एक ही व्यापार,
देनी मूर्ति है येही करार;
कोई लो कोई लो ऐसा कहते,
केवल कृपा से मूर्ति देते ।
संत हरिजन जो जोग करते,
उनको बापा ऐसी बातें करते;
देश विदेश में जहाँ जहाँ जाते,
मुमुक्षु जन तुरत खींचाते ।
जैसे लोह चमक देख चले,
संत हरिजन ऐसे ही मिले;
जैसे नदियाँ समुद्र में जाय,
संत हरिजन ऐसे खिंचाय ।
देश विदेश से जो आते,
उनको मूर्ति महाराज की देते;
ऐसे सई बापाश्री ने आकर,

मूर्तिरस की रेल चलाई ।
और वचनामृत की टीका कीनी,
दो भाग में वार्ता प्रसिद्ध कीनी;
उसमें लिखवाये ऐसे मुद्दे,
मूळअक्षर से पुरुषोत्तम जुदे ।
उसे लिखानेवाले सद्‌गुरु स्वामी,
ईश्वरचरणदासजी अकामी;
उसे पढ़े रखे सुने जेही,
मोक्ष आत्यंतिक पामते तेही ।
ऐसे कृपा वचन जिसने कहे,
वह तो मूर्ति में रखने आये;
नहीं है उधारो पाड़िये हा ही,
हुए रोकड कल्याण आज ही ।
जो है अक्षरधाम में सदा ही,
वह मूर्ति सदेह पामते ही;
मोटा पहचानना बड़ी घाटी,
मनुष्यभाव की रह जाती आंटी ।

जिसने पहचाने संशय मिटाकर,
उनको बापाने मूर्ति दे दी;
जिसने पहचाने नहीं लगार,
उनको तो हुई मूर्ति की देरी ।
जिसने संग में संशय किये,
उसने तो फिर जनम लिये;
जिसने अवगुन लिये हैं भारी,
उनकी तो हुई भारी खुवारी ।
जिसने जूठे जूठे डाले तूत,
वो तो मरकर हुए हैं भूत;
जिसको मिलाप बापा का हुआ है,
उनको मूर्ति में साथ रखे हैं ।

पूर्वछायो

जो जनके संशय मिटे,
उसे मिले प्रकट महाराज;
मुक्त भी प्रकट मिले,
और प्रकट संत समाज,
संत हरिजन सुनिए,

मैं अल्प मति तुम पास;
पहचाने अबजी तात को,
श्रीजी कृपा से करमणदास ।

राग – सोरठा

गुन्हा किये बक्षिस, केवल कृपा करी के,
स्वामी सेवक भाव से, रखे मूर्ति में सदा ।

४. स्वामिनारायण नाम प्रताप

फिर कही प्यारे ने एक बात, सुन लो सब जन साक्षात् ।
नाम हमारे हैं जो अपार, उस में भी किया है निरधार...१
मार्कंड ऋषि ने रखा है जो, नाम हमारा बस है वो ।
कृष्ण, हरि, हरिकृष्ण सार, नीलकंठ नाम निरधार...२
स्वामी रामानंद ने रखा जो, नाम हमारा बस है वो ।
सहजानंद है सुख धाम, दूजा नारायण मुनि नाम...३
प्यारा घनश्याम नाम जेह, मातपिता कहते कर स्नेह ।
वैसे तो हैं नाम हमारे बहुत, रखे भिन्न जनोंने कर जुक्त...४
पर है जो हमारा मूल नाम, भूल गये हैं वह तमाम ।
न आया नाम किसी के हाथ, इसलिए हो गया वो बाद...५

अब आज मैं करता प्रकाश, सुने ध्यान से हे सब दास ।
स्वामिनारायण मेरा नाम, याद करते सबको सुखधाम...६
दूजा नाम ले कोई अपार, फिर भी न आवे उसके साथ सार ।
स्वामिनारायण नाम सार, लिए एक बार निरधार...७
उन्हें अपार नाम का फल, तुरंत मिल जाये उस पल ।
अतः सोच लो जन सब सई, यह नाम अति सुखदाई...८
स्वामिनारायण नाम सार, रटते रहिये हे नर–नार ।
सभी नारायण का मैं स्वामी, रहे सब मुझे कर नामी...९
दूजे नारायण नाम कई, बतलाउं उनके में नाम कहीं ।
सूर्यनारायण जो कहलाते, वैराटनारायण भी कहलाते...१०
लक्ष्मीनारायण नाम कहलाता, नरनारायण भी कहलाते ।
वासुदेव नारायण सार, ऐसे नारायण नाम अपार...११
वह सब नारायण का मैं स्वामी, सब रहे मुझे कर नामी ।
स्वामिनारायण नाम है जो, कहता हूँ मैं आपको वो...१२
सर्वोपरी नाम है यह सार, रटते रहिये हे नर–नार ।
जपते हैं इस नाम को जो, पाये अलौकिक सुख वो...१३
ऐसे माहात्म्य नाम का सार, स्वयं हरि ने कहा अपार(२)

कीर्तन

१. स्वामिनारायण महामंत्र प्रताप

जो स्वामिनारायण नाम लेंगे, उनके सभी पाप जल जायेंगे ।
हैं नाम मेरे श्रुति में अनेक, सर्वोपरी आज गिना जाए एक ।
जो स्वामिनारायण एक बार, रटे दूजे नाम रटते अपार ।
नाम जपे जो मिलता है फल, कर सके कौन उसका वर्णन ।
षडाक्षरी मंत्र महासमर्थ, जिससे हुए सिद्ध समस्त अर्थ ।
सुखी करे संकट सर्व काटे, जीते ही जी मूर्तिधाम देते ।
गायत्री से लक्ष गुना विशेष, जाने इसका महिमा अक्षरेश ।
जहाँ जहाँ मुक्तजन हैं बसते, इसी काल में वो यही जाप जपते ।
जो श्रवण में सुने अंतकाल, पापी हो फिर भी मोक्ष मिले ।
यह मंत्र से भूतपिशाच भागे, यह मंत्र से तो सद्बुद्धि जागे ।
जिस मुख से महामंत्र जाप होवे, उनसे यमराजा भाग जावे ।
श्री स्वामिनारायण जो कहेंगे, भाव-कुभाव से मुक्ति लेंगे ।
षडाक्षरा है षट्शास्त्र सार, ले जावे वह भव सिंधु पार ।
सभी ऋतु में दिन हो या रात, स्मरन करो, करते हर काम ।
पवित्र देह अपवित्र देह, यह नाम नित्य लिजे सनेह ।

जल से तो तन का मेल जाय, इस नाम से अंतर शुद्ध होय ।
जिसने महापाप किये अनंत, जिसने पीडे ब्राह्मिन, धेनु, संत ।
वह स्वामिनारायण नाम लेते, लाज से मर जाए कहते ।
श्री स्वामिनारायण नाम सार, है पापों का विनाशकार ।
दिल होवे बहुत पापी जिसका, जले बिना रहे कैसे उसका ।

२. आज सखी आनंद की हेली

आज सखी आनंद की हेली,
हरिमुख देख मैं तो हो गई रे घेली;
महा रे मुनि के ध्यान में नहीं आवे,
वही साँवरियाजी मुझ को बुलावे...१
जो सुख को भव ब्रह्मादिक इच्छे,
वही साँवरियाजी मुझको रे प्रीछे;
न गई गंगा गोदावरी काशी,
घर बैठे ही मिले धाम के वासी...२
तप रे तीरथ में मैं कछु ही नहीं जानूँ,
सहज सहज रे मैं तो सुख ही मानूँ;

जेराम कहे स्वामी सहजै रे मिले,
बात ही बात में प्यारे अढरक ढले...३

३. घर में चलते आये

घर में चलते आये ब्रह्ममहोलवासी रे,
जिसको कहे अक्षरातीत अविनाशी रे...१
देखो जीव मोह निद्रा में से जागी रे,
वरी उनको थाइए अखंड सोहागी रे...२
देखते देखत आई मेरी जान रे,
खुद पति पुरुषोत्तम भगवान रे...३
संत-भक्तादिक धरे जिसका ध्यान रे,
मेरे नैंन करे जो मुख का दर्शन रे...४
उनकी सब देख अलौकिक रीत रे,
चिपका मेरा सुंदरवर में चित्त रे...५
हस्तमिलाप हरि संग मैंने कीना रे,
भूमानंद कहे जन्म सुफल कर लीना रे...६

४. हम तो बापा के संतान

हम तो बापा के संतान,
हमारे बापा जीवनप्रान...टेक
बापा को शिर पाग सोहावे,
शोभित अंगरखी की चाळ;
गुलाब के हार गजरा बंध,
धारण वह करनार...हम०१
प्रेमीजनों को लाड लडावे,
देवे सुख अपार;
भक्त जन के दुःख काटने को,
सदा ही है तैयार...हम०२
बापाश्री है रक्षक जिनके,
द्रोही क्या करनार;
बापाश्री के कर हैं शिर पर,
कृपा उन पर अपार...हम०३
बापाश्री की बातें तो हैं,
मूर्ति सुख देनार;
जब ही बातें पढ़े तब,
बापा बोलनहार...हम०४

बापाश्री आज प्रकट मिले तो,
क्यों होवे लाचार;
दास के दास कहे मस्त बनो भाई,
बापा है रखवाल...हम०५

११. प्रार्थना

१. संकल्प प्रार्थना

हो प्राणप्यारे श्रीजी, यह संकल्प में बल दीजिये...टेक
लाये हो तव संकल्प से तो, संकल्प में ही समाइये;
समय, शक्ति, बुद्धि, आवडत, तव अर्थे वपराइये,
तव अर्थे वपराइये, बस दिव्यजीवन कराइये,
बेटा-बेटी घर के सदस्य, अनादिमुक्त मनाइये;
मेरे हैं यह भाव भूली के, तव अर्थे जिवाइये,
नोकरी धंधा द्रव्यादिक सब, ट्रस्टीपद से भुगताइये;
ट्रस्टीपद से भुगताईये, समय पे सहजै छुडाइये...२
आपके लिये जनम हमारा, समज दृढ़ कराइये;
देह नहीं मैं मुक्त अनादि, अखंड मनन रखाइये,

रसबस कर के मूर्ति में रख्खे, 'महाराज' ही ठसाइये;
'महाराज' ही ठसाइये, बस तव सुख में डुबाइये...३

२. हो श्रीजी तुम्हारा प्रगटपना

हो श्रीजी तुम्हारा प्रगटपना, अंतर्यामीपना अखंड रहो;
हो श्रीजी सदा तुम राज़ी रहो, ऐसा दिव्यजीवन मुजे जीना है;
हो श्रीजी तुम्हारा...टेक
मेरी सबही क्रिया तुम देखत हो, सबही संकल्प को तुम जानत हो;
दिव्य दृष्टिरूपी तव केमेरा, सदा हम पर धारत हो;
आज्ञा विरुद्ध कुछ होवे नहीं, ऐसा प्रगटपना रखाइये...१
रहते हो हम जब तुम्ही पास, और जैसी मर्यादा रहे;
जावे दूर कि रहे एकांत में, तब भी ऐसी मर्यादा रहे,
सदा ही राज़ी कर सके, ऐसा जानपना रखाइये...२
जितना होगा हमें प्रगटपना, अंतर्यामीपना दृढ़ होगा;
इतना ही जय हमारा होगा, नहि तो सदा पराजय होगा;
ऐसे अंतर के शत्रुओं से, सदा जय हमारा कराइये...३

३. आपके ते गगन में

आपके गगन में मैं छोटा परेवा,
आपके इशारे ऊड़ जाउँ;
आपके बचन मेरे जीवन का राह है,
आपकी रुचि में ही जी जाउँ...टेक
आपकी इच्छा में आयु पिघला दुँ,
आप चाहो ऐसे मैं तो रहुं;
दास का दास होई आप में बली जाउँ,
दिव्यजीवन आप में से लेउँ...रे मै तो..
बंसी बनना है मुझे आपके अधरकी ही,
आपके ही सूर मैं रेलाउँ,
मूर्ति में रसबस रखो मेरे स्वामी,
महिमा की सोच में डूब जाउँ...रे मै तो..
दीन बालक मैं आपका गुलाम होके,
प्रसन्नता आपकी मैं पाउँ;
मारग भी आप मेरी मंझिल भी आप हो,
मैं आप ही से आप में समाउँ...रे मै तो..

४. तुम्हारी मूर्ति बिन मेरे नाथ रे

तुम्हारी मूर्ति बिन मेरे नाथ रे,
दूजा मुझे दीजिये ना;
मैं तो एही माँगू जोड़ हाथ रे;
दूजा मुझे दीजिये ना...टेक
दीजै आपके जन का संग रे...दूजा
मेरे जीव में वो ही उमंग रे...दूजा १
मेरे उर में करो निवास रे...दूजा
मुझे रखो रसिया तुम पास रे...दूजा २
वो ही अरज दयानिधि देव रे...दूजा
दीजै चरण कमल की सेव रे...दूजा ३
कीजै इतर वासना दूर रे...दूजा
रखो प्रेमानंद को हजूर रे... दूजा ४

१२. वचनामृतम्

गढडा प्रथम : १५ वाँ वचनामृत

संवत् १८७६ मार्गशीर्ष वदि ३ तृतीया के दिन श्रीजीमहाराज श्री गढ़डा मध्य दादाखाचर के दरबार में विराजमान थे और सभी श्वेत वस्त्र धारण किये थे। और अपने मुखारविंद के सन्मुख सर्व साधुओं तथा देश-देश के हरिभक्तों की सभा भरी हुई बैठी थी।

बाद में श्रीजीमहाराजने इस प्रकार वार्ता कही कि, जिसके हृदय में भगवान की भक्ति हो उसकी वृत्ति ऐसी रहती है कि, भगवान तथा संत मुझे जो कुछ भी वचन कहेंगे तदनुसार ही मुझे करना है, ऐसी हिंमत उसके हृदय में बनी रहे, और इतने वचन मुझसे माने जायेंगे और इतने मुझसे नहीं माने जाए ऐसी बात तो भूल से भी न कहें।

और भगवान की मूर्ति को हृदय में धारना उस में शूरवीरता रहे और मूर्ति धारते धारते यदि धारण न हो तो भी कायर न होवे और नित नई श्रद्धा रखे तथा

मूर्ति धारते हुए जब बहुत ही बेहूदे संकल्प-विकल्प हों और उन्हें दूर करना चाहते हुए भी दूर न हों, तो भगवान का बहुत बड़ा माहात्म्य समझकर, अपने को पूर्णकाम मानकर, उस संकल्प को असत्य करता रहे, और भगवान के स्वरूप को हृदय में धारता रहे, यदि उसे धारते धारते दस वर्ष बीत जायँ, अथवा बीस वर्ष बीत जायँ अथवा पचीस वर्ष बीत जायँ अथवा सो वर्ष लग जायँ फिर भी कायर होकर भगवान के स्वरूप को धारना, त्याग न करें । इसलिए इसी प्रकार भगवान को धारता रहे ऐसा जिसे वर्तता हो उसे एकांतिक भक्त कहे । इति वचनामृतम् ॥ १५ ॥

१३. बापाश्री की बातें

वार्ता - ३२ (भाग-१)

वैशाख वदि १४ के दिन दोपहर के समय सभा में बापाश्री ने कृपा करके वार्ता कही कि, आज तुम्हें मिले हैं, वे व्यतिरेक मूर्ति हैं और उनके द्वारा आत्यंतिक कल्याण होता है परंतु अन्वय से होता नहीं है ।

बाद में स्वामी वृन्दावनदासजी ने पूछा कि, मोटा का विश्वास तो हो परंतु व्यतिरेक मूर्ति की महिमा जान सके नहीं, उसे मोटा श्रीजीमहाराज की मूर्ति के समीप ले जाय या नहीं ? तब बापाश्री बोले कि, मोटा के साथ जिसने मन बाँधा हो और आत्मबुद्धि की हो, तो मोटा उसे महाराज के सुख में ले जाते हैं।

इसके बाद स्वामी ईश्वरचरणदासजी ने पूछा कि, मुक्त के योग से जो मुक्त हो चुके हो उनका योग करे तो उसका आत्यंतिक कल्याण होवे या नहीं ? तब बापाश्री बोले कि, जिस तरह अनादिमुक्त के योग करने वाले का कल्याण होता है वैसा ही उनका योग करने वाले का भी कल्याण होता है।

तब पुनः स्वामी ने पूछा कि, मुक्त के योग से जो मुक्त होता है उसे महाराज स्वयं सुख देते हैं कि मुक्त दिलवाते हैं ? तब बापाश्री बोले कि, श्रीजीमहाराजने जीवों पर दया करके जिन अनादिमुक्त को पृथ्वी पर भेजे हों, उन मुक्त के वश होकर महाराज स्वयं सुख प्रदान करते हैं। ॥ ३२ ॥

१४. मंगल श्लोकों

(शार्दूलविक्रीडित छंद)

आदौ प्रेमवती वृषांगजननम्, सनैक तीर्थाटनम्,
दुष्कर्मोपशमं च साधुशरणम्, सद्धर्म संस्थापनम् ।
हिंसावर्जितभूरियज्ञकरणम्, मूर्ति प्रतिष्ठापनम्,
आर्यस्थापनमक्षराख्यगमनम्, सत्संगि सज्जीवनम् ॥

सत्तेजोक्षरधाम दिव्य वसतिं, श्री स्वामिनारायणं,
अनादि स्वकलीनकं सुखकरं, प्रत्यक्ष वैदेहिनं ।
प्रत्यक्षं मनुविग्रहं निजजने, भ्योमूर्ति सत्शर्मदं;
रोमैश्वर्य मुदा क्षराद्यसुखदं, ध्याये सदा स्वामिनं ॥

दिव्यं श्री घनश्याम कं शरण दं, कैशोर मूर्ति परम् ,
तेजः पुंज मुखारविंद सहजं, धर्मस्य भक्तेःर्प्रियम् ।
दिव्या भूषण वस्त्र भूषित प्रभुं, सत्संगि पूज्यं सदा;
कुंकुं केसर भाल चंद्र तिलकं, अर्च्ये सदा स्वामिनं ॥

वाणी मंगलरूपिणी च हसितम् यस्यास्ति वै मंगलम्,
नेत्रै मंगलदेच दोर्विलसितं, नृणां परं मंगलम् ।

वक्त्रं मंगलकृच्छ पादचलितम्, यस्याखिलं मंगलम्,
सोऽयं मंगलमूर्तिराशु जगतौ नित्यं क्रियान्मंगलम् ॥

कल्याणा कर मुत्त राष्ट शतकं, यत्प्रार्थना स्तोत्रकं,
धर्मार्थादि फलं त्रिताप शमनं, सर्वोन्नते शान्ति दं ।
प्रेताद्याभिचराख्य भीति शमनं, तत्संसृतेर्नाशकं;
भक्तानामभयं करं सुखकरं, वंदे सदा स्वामिनं ॥

वर्णीवेशरमणीय दर्शनं, मंदहास्यरुचिराननाम्बुजम्,
पूजितं सुरनरौत्तमैर्मुदा, धर्मनंदनमहं विचिन्तये ॥

१५. स्वामिनारायण नामावली

१. श्री हरिकृष्णाय नमः
२. श्री सहजानंदाय नमः
३. श्री घनश्यामाय नमः
४. श्री न्यालकरणाय नमः
५. श्री महाप्रभवे नमः
६. श्री स्वामिनारायणाय नमः

७. श्री भक्तिनंदनाय नमः
८. श्री नीलकंठ वर्णये नमः
९. श्री श्रीजीमहाराजाय नमः
१०. श्री पूर्णार्थाय नमः
११. श्री वृषनंदनाय नमः
१२. श्री हरये नमः
१३. श्री स्वामिने नमः
१४. श्री सर्वोपरी स्वरूपाय नमः
१५. श्री सद्‌गुरु गुरवे नमः
१६. श्री सर्वावतारीणे नमः
१७. श्री सदासाकाराकृतये नमः
१८. श्री सदानंद घन स्वरूपाय नमः
१९. श्री शुद्धाय नमः
२०. श्री सर्व कारण कारणाय नमः
२१. श्री महाराजाधिराजाय नमः
२२. श्री जन्माजन्मने नमः
२३. श्री नियामकाय नमः
२४. श्री सकलज्ञाय नमः
२५. श्री सदा प्राकट्य स्वरूपाय नमः

२६. श्री शान्ताकृतये नमः
२७. श्री स्वतंत्राय नमः
२८. श्री महातेजाक्षरधामाधिपतये नमः
२९. श्री स्वमूर्ति प्रदात्रे नमः
३०. श्री स्वसर्वोत्तमधामदाय नमः
३१. श्री दिव्यातिदिव्याय नमः
३२. श्री निर्दोषाय नमः
३३. श्री व्यतिरेक स्वरूपाय नमः
३४. श्री संकल्पस्वरूपाय नमः
३५. श्री अतिपूताय नमः
३६. श्री मूर्तिस्वरूपात्मक सुखदाय नमः
३७. श्री नित्यमुक्त स्थिति कराय नमः
३८. श्री अनादि स्वलीन स्थाय नमः
३९. श्री परमएकांतिक सन्मुखाय नमः
४०. श्री सर्वातिमुक्ताधिपतये नमः
४१. श्री तेजौंशी अन्वय स्वरूपाय नमः
४२. श्री सकलाक्षराद्य रोमैश्वर्य दात्रे नमः
४३. श्री सत्य प्रतिज्ञाय नमः
४४. श्री व्याप्तानंत सत्कीर्तये नमः

४५. श्री स्वामिनारायण नामकरणाय नमः
४६. श्री स्वनाम महत्त्व दर्शकाय नमः
४७. श्री स्वामिनारायण धर्म प्रस्तोत्रे नमः
४८. श्री प्रौढ प्रतापाश्रित सुखदाय नमः
४९. श्री सधः समाधि स्थितिकराय नमः
५०. श्री नित्यात्यंतिक मोक्षदाय नमः
५१. श्री परब्रह्मविद्या प्रदाय नमः
५२. श्री प्रतिमा स्वरूप सदाप्रत्यक्षाय नमः
५३. श्री दिव्यातिशांति प्रदाय नमः
५४. श्री दिव्याभूषण वस्त्र भूषिताय नमः
५५. श्री स्वसंत-भक्त महिमा करणाय नमः
५६. श्री स्वसंग संगी सुखदाय नमः
५७. श्री अंतःशत्रु निवारकाय नमः
५८. श्री उपशम स्थितिकारकाय नमः
५९. श्री आस्तिक्य प्रदाय नमः
६०. श्री वर्तमान धर्म प्रवर्तकाय नमः
६१. श्री मायाकाल विभेदकाय नमः
६२. श्री ध्यानातिप्रियाय नमः
६३. श्री सर्वजीवहितकाय नमः

६४. श्री अबुद्धि विध्वंसकाय नमः
६५. श्री सद्बुद्धि प्रदाय नमः
६६. श्री दीर्घदर्शीने नमः
६७. श्री क्षान्तानिधये नमः
६८. श्री कलीतारकाय नमः
६९. श्री चेतोनिग्रह युक्तिविदे नमः
७०. श्री निजजनोद्धारिणे नमः
७१. श्री सदा सत्पोषकाय नमः
७२. श्री दैत्यानां गुरु मोहकाय नमः
७३. श्री अहिंसा मखःपोषकाय नमः
७४. श्री परमहंस प्रीतियुक्ताय नमः
७५. श्री निर्लोभाय नमः
७६. श्री जितेन्द्रिय प्रियतराय नमः
७७. श्री तीव्र सुवैराग्याय नमः
७८. श्री सत्शास्त्रः व्यसनाय नमः
७९. श्री तपःप्रियतराय नमः
८०. श्री धैर्यान्विताय नमः
८१. श्री निर्दंभाय नमः
८२. श्री महाव्रतोन्नति कराय नमः

८३. श्री नैष्ठिकधर्म पोषणकराय नमः
८४. श्री सद्धार्मिकत्व प्रदाय नमः
८५. श्री प्रागल्भ्याय नमः
८६. श्री अपराजिताय नमः
८७. श्री अतिकरुणाक्षाय नमः
८८. श्री अधर्म विध्वंसकाय नमः
८९. श्री याताहंकृतये नमः
९०. श्री यातनिद्राय नमः
९१. श्री निर्मत्सराय नमः
९२. श्री निस्पृहाय नमः
९३. श्री भक्तानां कवचाय नमः
९४. श्री षडूर्मि विजयाय नमः
९५. श्री जिह्वा स्वादजित प्रियाय नमः
९६. श्री सुकोमलाय नमः
९७. श्री सुमधुर वाग्मिने नमः
९८. श्री नित्योदाराय नमः
९९. श्री सुभक्ति पोषण कराय नमः
१००. श्री दिव्य श्रवण कीर्तनाय नमः
१०१. श्री अद्रोहाय नमः

१०२. श्री कृपानिधये नमः
१०३. श्री अजात शत्रवे नमः
१०४. श्री अति निर्मान प्रियाय नमः
१०५. श्री साधुशील हृदयाय नमः
१०६. श्री धर्मार्थादि फलप्रदाय नमः
१०७. श्री भक्तवत्सलाय नमः
१०८. श्री सर्वैवं मंगल दिव्यमूर्तिये नमः
श्री अबजीबापाश्रीयै नमः
श्री गोपालानंदमुनियै नमः
श्री सद्‌गुरवे नमः
श्री सर्व मुक्तमंडलाय नमः
सहजानंद स्वामी महाराज की जय...

१६. सभागान

१. ध्येयगीत

बनेंगे हम आदर्श बाल, सदा मूर्ति में खेलनार;
भई हरिकृपा अपार, यह तो श्रीजी का दरबार ।
आज्ञा लोप न हो जरा, पाले हो के खबरदार;
कारण सत्संग जोरदार, संतन केरा है सहकार ।

तन, मन, धन सदा तैयार, तजेंगे ज़रूर पड़े घरबार;
सर्वोपरी सदा साकार, सबके कारण और आधार ।
करना प्रचार दुनियापार, संकल्प किया है निरधार;
सुख दुःख आवे अपरंपार, लगे विघ्नों की लंगार ।
तब भी हरिबल से जीनार, श्रीजी बापा रक्षणहार;
यह है जीवन का ही सार, राज़ी रहना सदाकाल ।

२. जीवन मंत्र

स्वामिनारायण भगवान मेरे इष्टदेव हैं ।
यह सत्संग मेरा घर है ।
महाराज की मूर्ति मेरा ध्येय है ।
सदेह मैं मूर्ति धाम में ही हूँ ।
महाराज के लिए ही मेरा जन्म है ।
उनका होकर ही सदा जीना है ।
भगवान एवं संत की सेवा ही मेरा सुख है ।
उनकी आज्ञा और अनुवृत्ति में ही सदा रहूँगा ।
सत्संगीमात्र के सुखदुःख में सदा भागीदार बनूँगा ।
– जय श्री स्वामिनारायण...

३. विजय गान

आश्रितगण सुखदायक जय हो, संस्कार केन्द्र प्रदाता;
दीन बालकों के सुखदाता, दोष मात्र के ज्ञाता,
मात तात व भगिनी भ्राता, आप ही कर्ता हर्ता,
तुज शरण में जो आवे, जीवन धन्य बनावे,
श्रीजी का यश गाता ।
आत्यंतिक कल्याण के दाता, फिरे हम प्रचार करते;
देश विदेश में महिमा गाते, विजय ध्वजा लहेराते,
जय स्वामिनारायण जय हो, जय जय श्रीजी बापा;
जय हो, जय हो, जय हो,
जय जय जय हो....

xàÉé² iÐÐêÏ àéÐ. è ÐêS±àéàë è

xÉéìé² üÐÐê Ïàæ. èÜüçÂ Ã ¥àæè±Âè

"|ææàÝ S±àçàÝèÛé‡àÜèÌ }àç }àëçÝÚçÜ
¨ëHxÝÚãÝæ±äãè¨ ý xàèÜàë áéãñJ© ÜüçH»
|ææàÝ Üü|àçQÜàæ. è±Ý |ææàÝ }àë¨ ëHxÝÚã
¨Üü»ï i |æÝ-|àçQÜ ï² éQÜãàÝæ™ àçã» J² ã
'çÝý² çÝ² }àèÐçS,ÜàèÜàêÐ² àæèÜÜÚÜüã}àæ¥ÐÝæ
ÎçÝÜü. è±Ý |æÝ-|àçQÜ² éQÜÜüèàë, àè}ããàéÐ|àé
¥±à² ãèÚàæèãàçÝ áé}àç Üàë ¶| Îèàà"

¨ ý xàë àçãý² çÇÐàÅüàëÅ
S±àçàÝèÛé‡àæ{ àæ§Èüàë ÅèÜü¨ àæÝ,
Üàæàxàêéxàãé§ü, xàèéxàé ÈüàÝ : 23213052, 53
Email : ssd@in.smvs.org